करवा चौथ व्रत कथा | By Divya Shakti |

करवा चौथ की कथा कहूँ
सब सुखों की टेक।
लेखन में बनी जो प्रभु,
दीज्यो ज्ञान विवेक॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

ब्रह्मा विष्णु ध्यान धरूँ,
पूजूँ नित ही महेश।
गणपति मेरी लाज रखें,
काटें सकल क्लेश॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

करवा मैया है मेरी,
गौरा माँ का रूप।
आदि काल लिए पार्वती,
सब ही हैं प्रतिरूप॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

कर लो माँ की वंदना,
सुख समृद्धि आए।
जीवन सुख से भर जाए,
रिद्धि सिद्धि पाए॥

मंगलकारी माँ,
पावनकारी माँ॥

जय हो करवा माँ,
मेरी प्यारी माँ॥

व्रत ये पावन है सुनो,
रखे सुहागिन नारी।
दीर्घायु की कामना,
मन में हर्ष अपार॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

पति की आयु के लिए,
व्रत ये धारे नारी।
अन्न जल सब त्याग के,
खोवे नित तैयारी॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

पहला व्रत करवा ने रखा,
तुमको दूँ मैं बताए।
करवा नाम की नारी थी,
तुमको कथा सुनाए॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

पति गया स्नान को,
मगर ने पकड़ा पैर।
करवा करवा चिल्लाता,
मना रहा था खैर॥

मंगलकारी माँ,
पावनकारी माँ॥

जय हो करवा माँ,
मेरी प्यारी माँ॥

करवा तब दौड़ी वहाँ,
पति का बंध छुड़ाए।
मगर को बाँधा धागे से,
तपोबल तब वो दिखाए॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

सती थी नारी वो करवा,
तप का बल था विशेष।
यम को उलझन में डाला,
खोया बुद्धि विवेक॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

मृत्यु दंड माँगा करवा,
चित्रगुप्त से जाए।
साँप मैं हूँ या व्याघ्र तुम्हें,
कुछ भी समझ न आए॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

हल निकला भक्तों ये तब,
दे डाला वरदान।
सदा सुहागन उसे किया,
लौटाया सम्मान॥

मंगलकारी माँ,

पावनकारी माँ॥

जय हो करवा माँ,
मेरी प्यारी माँ॥

वेद शर्मा ब्राह्मण की कथा,
सुन लो ध्यान लगाए।
इंद्रप्रस्थपुर में रहता,
गुणिजन यही बताए॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

सात पुत्र एक पुत्री थी,
वीरावती था नाम।
इकलौती थी लाड़ली,
रखते सब ही ध्यान॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

शादी लायक हो गई,
हो गया उसका विवाह।
करवा चौथ का व्रत आया,
आगे सुनो कथा॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

भूख प्यास सह न पाई,
हुई मूर्छित तत्काल।
सब भाई हैरान थे,
मानो आया काल॥

मंगलकारी माँ,
पावनकारी माँ॥

जय हो करवा माँ,
मेरी प्यारी माँ॥

कष्ट नहीं देखा गया,
सोच रहे सब भाई।
दीप धरा तब छलनी पर,
पीपल पेड़ छुपाई॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

जाकर झूठ ये कह दिया,
बहना निकला चाँद।
दर्शन कराया बहना को,
कर दिया घोर पाप॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

व्रत खोला तब बहना ने,
आगे सुनो दृष्टांत।
पहले रोटी कौर में,
बाल दिया दिखलाए॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

दूजी कौर में छींक आई,
तीजे निमंत्रण आई।
खबर पाई ससुराल से,
पति को मृत था पाए॥

मंगलकारी माँ,
पावनकारी माँ॥

जय हो करवा माँ,
मेरी प्यारी माँ॥

अकुलाई रोने लगी,
करती बहुत विलाप।
वीरावती के मन उमड़ा,
शोक बहुत संताप॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

इंद्राणी ने चेताया,
हुआ भूल एहसास।
व्रत तोड़ा जो पहले ही,
हुआ घोर ये पाप॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

अगले बरस फिर व्रत को करो,
दे दिया तब निर्देश।
करवा चौथ व्रत फिर आया,
सब सुखों की टेक॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

एक बरस तक ना किया,
पति का दाह संस्कार।
उमड़ी थी तब आस ही,
जगा था विश्वास॥

मंगलकारी माँ,

पावनकारी माँ॥

जय हो करवा माँ,
मेरी प्यारी माँ॥

उसको भरोसा था माँ पे,
मिलेगा जीवन दान।
शव के पास बैठी थी वो,
लगाके माँ का ध्यान॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

सुइयाँ चुभी थीं पति तन में,
भक्तों तब से अनेक।
तप से सुइयाँ घटने लगीं,
सात रह गईं शेष॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

इंद्राणी की बात से,
गिनती करती जाए।
यम सुई ले लो, प्रिय सुई दे दो,
बात यही दोहराए॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

छह भाभी तब ना मानी,
गिनती करती जाए।
सातवीं भाभी में शक्ति,
जीवन दो दिलवाए॥

मंगलकारी माँ,
पावनकारी माँ॥

जय हो करवा माँ,
मेरी प्यारी माँ॥

जिस भाई की झूठ से,
व्रत टूटा था विशेष।
उसकी पत्नी की शक्ति से,
जीवन मिला था नेक॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

आग्रह उसने बहुत किए,
तब मानी वह बात।
छोटी भाभी ने माँ से,
तब ली जीवन दात॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

इसे सुहागिन फिर से करो,
चरणन विनय लगाए।
क्षमा किया करवा माँ ने,
पति को जीवित पाए॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

दीर्घायु पति हो गया,
सुखी हुआ परिवार।
सारे जग में तब गूँजे,
करवा माँ की जयकार॥

मंगलकारी माँ,
पावनकारी माँ॥

जय हो करवा माँ,
मेरी प्यारी माँ॥

द्रौपदी ने व्रत ये रखा,
सुख समृद्धि पाए।
गौरा माँ ने व्रत धरा,
अजर अमर शिव पाए॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

पूजन कर लो तुम विधि से,
फल पाओ सुख धाम।
करवा माँ की कृपा से,
बनेंगे बिगड़े काम॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

अक्षत रोली कुमकुम से,
माँ का करो मनुहार।
चूड़ी बिंदी मेहँदी से,
करो सोलह श्रृंगार॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

चंद्रोदय के बाद व्रत,
पावन ये खुल जाए।
पति पत्नी में प्रेम बढ़े,
जीवन भर सुख पाए॥

मंगलकारी माँ,

पावनकारी माँ ॥

जय हो करवा माँ,
मेरी प्यारी माँ ॥

बूँदी राजस्थान में,
करवा का शुभ धाम।
सभी सुहागिन पूजा करें,
मैया करे कल्याण ॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ ॥

माधवपुर में मेला लगे,
दर्शन करत जहाँ।
भीम सिंह ने था किया,
मंदिर का निर्माण ॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ ॥

शक्ति अंश माँ गौरा का,
करवा माता कहाए।
पूजन करती है दुनिया,
चरणन शीश नवाए ॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ ॥

दर्शन करके धाम का,
जीवन सफल करो।
करवा माँ की कृपा से,
सुख समृद्धि लो ॥

मंगलकारी माँ,
पावनकारी माँ ॥

जय हो करवा माँ,
मेरी प्यारी माँ ॥

पति पत्नी के जीवन में,
जब त्योहार ये आए।
मन में जागे विश्वास तब,
प्रेम बहुत बढ़ जाए ॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ ॥

एक दूजे की आस है,
मोती और एक सीप।
ज्योति बिन कैसे जले,
बोलो घर में दीप ॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

लक्ष्मी पावन रूप है,
पत्नी का प्रतिरूप।
दोनों मिल के सहते हैं,
जीवन छाँव धूप॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

कर लो माँ से प्रार्थना,
टूटे ना ये डोर।
तब ही जीवन में होगी,
खुशियों की भोर॥

मंगलकारी माँ,
पावनकारी माँ॥

जय हो करवा माँ,
मेरी प्यारी माँ॥

महिमा करवा चौथ की,
जो भी सुनता गाए।
आशीष पाता मैया से,
मनवांछित फल पाए॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

ये है कथा करवा माँ की,
कृपा से भरपूर।
पाप अँधेरा काटती,
सुख का देती नूर॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

गाई दिव्य शक्ति ये,
माँ की कृपा पाए।
रचना रच दी दीपक ने,
माँ ने दी लिखवाए॥

जय जय करवा माँ,
जय जय गौरा माँ॥

गाथा गाऊँ मैया की,
भर जाए भंडार।
जिनकी कृपा से नित ही मन,
जीवन में त्योहार॥

मंगलकारी माँ,

पावनकारी माँ ॥

जय हो करवा माँ,
मेरी प्यारी माँ ॥

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%95%e0%a4%b0%e0%a4%b5%e0%a4%be-%e0%a4%9a%e0%a5%8c%e0%a4%a5-%e0%a4%b5%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a4%a4-%e0%a4%95%e0%a4%a5%e0%a4%be-by-divya-shakti/